कुछ अनमोल वचन

डॉ. अमर पुरोहित, न्यू यॉर्क

संस्कृत मंत्र या श्लोक

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १ ॥

ॐ ऋचः वाचं प्रपद्ये
सामः प्राणं प्रपद्ये
मनो यजुः प्रपद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये ॥ २ ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे,
शिस्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ३ ॥
(Gita 2:7)

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥
यत्पृथिव्यां व्रीहि यवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।
एकस्यापि न पर्याप्तं तस्मात् तृष्णां परित्यजेत् ॥ ४ ॥

हिन्दी पद्य अनुवाद

सूर्यदेव देवाधिदेव तुम,
विश्व प्रकाशक भर्ग बहोर ।
तीन लोक में आप व्याप्त हो,
दिव्य दीप्ति फैली चहुँ ओर ॥
करुणा कर किरणों से प्रभु तुम,
सद्बुद्धि आज प्रेरित कर दो
सत्कर्म अनुष्ठित सभी का साधे
सर्वलक्ष्य सिद्धि वर दो ॥ १ ॥

ऋग्वेद की वाणी दो प्रभु,
करो साम की भक्ति प्रदान ।
यजुर्वेद की कर्म दक्षता,
मिले अथर्व की मुक्ति महान ॥ २ ॥

कायरता से दूषित हूँ मैं,
धर्म-कर्म से विमुख हुआ ।
श्रेयष्कर पथ निश्चित कर दो,
शिष्य आपके शरण हुआ ॥ ३ ॥

काम-भोग की प्रबल पिपासा,
उपभोग करे केवल प्रज्वल ।
नृप ययाति से शिक्षा लो तुम
शम और दम ही हैं सबल
सकल सृष्टि के सारे सुख भी,
यदि उपलब्ध किसी को हो,
शान्त न्हीं होगी तृष्णा तो,
शम सन्तोष न जब तक हो ॥ ४ ॥